3.3.3.

(International Refereed)
Impact Factor 2.632

हिन्दू अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध-पत्रिका

वर्ष:4, अंक:16 (अगस्त-अक्तूबर, 2017) (पृ.सं. 243-245) (ISSN 2348-0114)

अशोक के फूल निबन्ध द्वारा प्रस्तुत विभिन्न परिदृश्य

मधु राठौर
राजकीय महिला महाविद्यालय
हिन्दी-विभाग

शोध-आलेख सार

'अशोक का फूल' निबंध संग्रह में द्विवेदी जी ने विविध विषयों को छुआ है। इस पुस्तक के प्रकाशन के समय देश बदलाव के दौर से गुजर रहा था। हिन्दी साहित्य में नव चेतना का जागरण हो रहा था। देश स्वाधीन हो गया था। इस समय में साहित्यकारों के दायित्व पर द्विवेदी जी ने विशेष बल दिया था। द्विवेदी जी ने प्रकृति के लिए 'अशोक के फूल', 'बसंत आ गया है और 'एक कुत्ता और एक मैना' जैसे निबन्ध लिखे हैं।

मुख्य-शब्द : सौन्दर्य की सृष्टि, फलित ज्योतिष ।

'अशोक के फूल' हजारी प्रसाद द्विवेदी का लिखा हुआ एक निबंध संकलन है श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी उन जाने-माने चिंतकों में से है जिनकी मूल निष्ठा भारत की पुरानी, संस्कृति में है लेकिन साथ ही नूतनता का आश्चर्यजनक सामंजस्य भी उनमें पाया जाता है। उन्हें आचार्य कहकर सम्मान दिया गया था। हिन्दी साहित्य जगत में द्विवेदी जी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। द्विवेदी जी की रचनाओं में अथाह ज्ञान और उसके पीछे की गई कड़ी मेहनत साफ झलकती है। भारतीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य, ज्योतिष और विभिन्न धर्मों का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया है तथा अपनी लेखनी का विषय बनाया है उनकी विद्वता की झलक 'अशोक के फूल' निबंध संकलन में साफ झलकती है। द्विवेदी जी की एक विशेषता यह भी है कि वे छोटी से छोटी चीज को भी सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं।

'अशोक का फूल' निबंध संग्रह में द्विवेदी जी ने विविध विषयों को छुआ है। इस पुस्तक के प्रकाशन के समय देश बदलाव के दौर से गुजर रहा था। हिन्दी साहित्य में नव चेतना का जागरण हो रहा था। देश स्वाधीन हो गया था। इस समय में साहित्यकारों के दायित्व पर द्विवेदी जी ने विशेष बल दिया था। द्विवेदी जी ने प्रकृति के लिए 'अशोक के फूल', 'बसंत आ गया है और 'एक कुत्ता और एक मैना' जैसे निबन्ध लिखे हैं।

'अशोक के फूल' में द्विवेदी जी लिखते हैं कि आज अशोक के महत्त्व को दुनिया भूलती जा रही है।

अशोक का वृक्ष हमारा प्राचीन वृक्ष है। अशोक के फूल दो प्रकार के होते हैं लाल व सफेद। सफेद फूल तांत्रिक क्रियाओं में तथा लाल स्मरवर्धक होते हैं। अशोक के फूल अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा सुन्दर हैं। चैत्रशुक्ल अष्टमी को व्रत करने और अशोक की आठ पत्तियों के भक्षण से सन्तानविहीन स्त्रियों को सन्तान की प्राप्ति होती है। यह वृक्ष मनोहर, रहस्यमयी और अलंकारमय है।

"कालिदास जैसे कल्पकवि ने अशोक के पुष्प को ही नहीं, किसलय को भी मदमत करने वाला बताया था। अवश्य ही शर्त यह थी कि वह दयिता (प्रिया) के कानों में झूम रहा हो-'किसलय प्रसवोऽपि विलासिनां मदयिता दषिता श्रवणार्पितः।"[1]

लेखक लिखते हैं कि दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है। केवल उतना ही याद रखती है जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी का फैंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा क्योंकि उसे वह याद

रखती? सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।

द्विवेदी जी छोटी से छोटी चीज को भी सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं 'बसंत आता है, हमारे आस–पास की वनस्थली रंग–बिरंगे पुरुषों से आच्छादित हो उठती है लेकिन हममें से कितने हैं, जो उसके आकर्षक रूप को देख और पसंद कर पाते हैं? अपनी जन्मभूमि का इतिहास हममें से कितने जानते हैं? पर द्विवेदी जी की पैनी आँखें उन छोटी, पर महत्वपूर्ण चीजों को बिना देखे नहीं रह सकी। इतिहास को आधार में रखकर लिखे गए 'भारतीय संस्कृति की देन, संस्कृत का साहित्य और भारतीय फलित ज्योतिष निबन्धों में द्विवेदी जी ने इतिहास के सूक्ष्म अध्ययन का परिचय देते हुए कई घटनाओं को, जो प्रथम दुपट्टा बहुत अलग जान पड़ती है एक सांझा पृष्ठभूमि प्रदान की है। भारत के युग प्रवर्त्तकों जैसे कबीर और रवीन्द्रनाथ टैगोर को जगह–जगह उद्धृत किया गया है बल्कि टैगोर पर पूरा निबन्ध लिखा है इसके पीछे लेखक का शांति निकेतन में पाठन करना एक कारण हो सकता है।

इस समय के 'साहित्यकारों के दायित्व' पर द्विवेदी जी ने विशेष बल दिया है। द्विवेदी जी का कहना है कि साहित्य को हमेशा किसी बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य करना चाहिए। उन्होंने मानव की सेवा को साहित्य का महत्वपूर्ण लक्ष्य माना है। एक निबन्ध में द्विवेदी जी ने कहा भी है कि मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है और साहित्य साध्य नहीं है बल्कि साधन है और उसमें उसी रूप में प्रयोग करना चाहिए। साहित्य का उद्देश्य विलास का न होकर चरित्र विकास का होना चाहिए। उन्होंने प्राचीन भारतीय साहित्य को भारतीयों द्वारा पढ़े जाने और उनके अर्थ निकालने पर जोर दिया है।

साहित्यकारों का दायित्व में द्विवेदी जी लिखते हैं कि अगर हमें संसार में महान राष्ट्र बनाकर रहना है, तो हमें अपनी समूची जनता को ज्ञान–विज्ञान के प्रति उत्सुक और मनुष्य के न्याय अधिकारों के प्रति जागरूक बना देना होगा। कल तक हम बात बनाकर काम चला सकते थे, आज नहीं चला सकते "हमें जीवन के हर क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए साहित्य चाहिए–साहित्य जो मनुष्य–मात्र की मंगल भावना से लिखा गया है और जीवन के प्रति एक सुप्रतिष्ठित दृष्टि पर आधारित हो।"[2]

मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है में लेखक लिखता है कि सच्चे जनसमूह में भाषा और भाव की एकता और सौहार्द का होना अच्छा है। इसके लिए तर्कशास्त्रियों की नहीं, ऐसे सेवाभावी व्यक्तियों की आवश्यकता है जो समस्त बाधाओं और विघनों को शिरसा स्वीकार करके काम में जुट जाते हैं। वे ही लोग साहित्य का निर्माण करते हैं और इतिहास का भी।[3]

कल्याण साहित्य का चरम लक्ष्य है जो साहित्य केवल कल्पना विलास है, जो केवल समय काटने के लिए लिखा जाता है, वह बड़ी चीज नहीं है, बड़ी चीज वह है, जो मनुष्य को आहार–निद्रा आदि पशु सामान्य धरातल से ऊपर उठाता है। मनुष्य का शरीर दुर्लभ वस्तु है, इसे पाना ही कम तप का फल नहीं है, पर इसे महान् लक्ष्य की ओर उन्मुख करना और भी श्रेष्ठ कार्य है।

साहित्य के उपासक पैर के नीचे की मिट्टी की उपेक्षा नहीं कर सकते। हम सारे बाह्य जगत को असुन्दर छोड़कर सौन्दर्य की सृष्टि नहीं कर सकते। सुन्दरता सामंजस्य का नाम है।

मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है में भेदभाव करने वाले लोगों का विरोध करते हुए कबीर ने हैरान होकर कहा था :

"कबीर इस संसार को समझाऊँ कै बार।
पूँछ जु पकड़े भेद का, उतरा चाहै पार।।"[4]

द्विवेदी जी ने भारतीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य, ज्योतिष और विभिन्न धर्मों का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया है। इसकी झलक इस पुस्तक में संकलित इन निबन्धों में मिलती है। छोटी–छोटी चीजों, विषयों का सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन और विश्लेषण–विवेचन उनकी निबन्धकला का विशिष्ट व मौलिक युग है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भारतीय मनीषा के प्रतीक और साहित्य एवं संस्कृति के अप्रतिम व्याख्याकार माने जाते हैं और उनकी मूल निष्ठा भारत की पुरानी संस्कृति में है लेकिन उनकी रचनाओं में आधुनिकता के साथ भी आश्चर्यजनक सामंजस्य पाया जाता है।